IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सह शिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

'निखिल''डॉ0 शालिनी तिवारी
एम0एड0 छात्र सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय
स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ उ0प्र0

सारांशः—प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा ''सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है।

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपक्वता जैसे गुण पर उनके विद्यालयी परिवेश (सह शिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय) के प्रभाव के कारण उनमें अंतर हो सकता है इसकी वास्तविकता को जानने के लिये शोधार्थी ने उपयुक्त अभिकल्प का चुनाव करते हुए डॉ नलिनी रॉव द्वारा निर्मित सामाजिक परिपक्वता मापनी का प्रयोग करके मेरठ जनपद के उच्च माध्यमिक सह शिक्षा विद्यालय व एकल शिक्षा विद्यालय से न्यादर्श विधि से चयनित 100 छात्र एवं छात्राओं से तथ्यों को एकत्र करके मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी परीक्षण जैसे सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से परिणाम को प्राप्त किया था शोधार्थी अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिपवक्ता के गुणों में पर्याप्त अंतर है।

मुख्य शब्द—
सह शिक्षा विद्यालय एकल शिक्षा विद्यालय, उच्च माध्यमिक स्तर सामाजिक परिपवक्ता।

प्रस्तावना–

किसी भी देश या समाज के वर्तमान को विकसित एंव भविष्य को उज्जवल बनाने की अधार शिला शिक्षा होती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे बालक का सर्वागीण विकास हो पाता है। शिक्षा के द्वारा समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता के रथ को आगे बढ़ाता है। जीवन की उदारता, उच्चता शारीरिक व मानसिक और भावात्मक विकास तब तक भली प्रकार नहीं हो सकता जब तक वह शिक्षा को ग्रहण नही कर लेता है इसके साथ ही समाज मे सुख समृदधि लाने का कार्य भी शिक्षा ही करती है।

सामान्यताहम कह सकते है कि शिक्षा का अर्थ सीखने और सिखाने की प्रक्रिया से है। विद्यालयी शिक्षा को देखते हुए यदि हम इसके उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नजर डाले ता पाते है कि यह शिक्षा विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में बहुत अधिक योगदान रखती हैं क्योकि यह माध्यमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होती है जिसमे प्रवेश करते ही विद्यार्थी अपनी उच्च तथा व्यवसायिक शिक्षा का चयन करने हेतु तैयार हो जाते है।

जैसे की हमे ज्ञात है कि उच्च माध्यमिक शिक्षा में मुख्य रूप से 16 से 18 वर्ष आयुवर्ग वाले विद्यार्थी होते है जो कक्षा 11 तथाा 12 के विद्यार्थी होते है। इस आयुवर्ग के विद्यार्थी किशोरावस्था से गुजर रहे होते है जो एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें बालक और बालिकाओं में अनेकां विकासात्मक परिवर्तन होते है।

यह परिवर्तन केवल शारीरिक ही नही बल्कि उनके बौद्धिक, सामाजिक तथा सन्वेगात्मक पक्ष से जुड़े होते हैं। विकास के ये पक्ष परस्पर सम्बान्धित होते हैं तथा ये विकास ही बालकों की सामाजिक परिपवक्ता को दर्शाते है।

उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थी–

उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य ऐसे विद्यार्थी से है जो कक्षा 10 को उत्तीर्ण करने कक्षा–11 में अध्ययनरत है।

सह शिक्षा विद्यालय–

सह शिक्षा विद्यालय से तात्पर्य ऐसे विद्यालय से है जहाँ छात्र–छात्राएं एक ही कक्षा में एक साथ अध्ययन करते है और विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है।

एकल शिक्षा विद्यालय

एकल शिक्षा विद्यालय से तात्पय्र ऐसे विद्यालय से है जहां एक ही लिंग के विद्यार्थी (छात्र या छात्रा) अध्ययन करते हो।

सामाजिक परिपक्वता–

सामाजिक परिपक्वता का तात्पर्यय समाज की परिस्थितियों और संस्कृति के अनुसार कार्य करने की क्षमता और प्रतिकिया से है जो बालक में सामाजिक कुशलताओं का विकास करती है।

अध्ययन की आवश्यकता –

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। देश धन धान्य से पूर्ण था और शोर्य तथा पराकम में अद्वितीय था। भारत में अपार धन सम्पदा इसलिए थी कि देश ज्ञान विज्ञान से संपुष्ट था। भारत का वैभव उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है कहा जा रहा है कि वह राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। आज का मानव अनेक परिस्थितियों से घिरा हुआ है। उसकी आवश्यकताऐं इस भौतिक युग में अन्नत है। वह अपने साधनों के द्वारा इन आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा रहता है, परन्तु यहजटिल प्रश्न है कि क्या आज का मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है, जिसको वह प्राप्त करना चाहता है? यह आज की सामाजिक अव्यवस्थाओं को देखते हुए असम्भव प्रतीत होता है फिर भी व्यक्ति समय के अनुसार अपने विवेक एवं बुद्धि से आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है और अपना समसयोजन स्थापित करता है। आज की शताब्दी मानव के विकास में अपना अनुठा स्थान रखती है। ज्ञान के विस्फोट के साथ आज मानव व्यवहार की प्रकिया, उसकी रूचि, कार्य कुशलता, उपलब्धि स्तर, व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन क्षमता आदि के साथ आबद्ध कर विद्यार्थियों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाने लगा है। आज बालकों की उपलब्धि अर्जन क्षमता, सकरात्मक वातावरण तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास तभी जब वह शैक्षिक उपलब्धियों के साथ सामाजिक परिपक्वता प्राप्त कर स्वंय को समाज के साथ समायोजिक कर सकेंगे तत्पश्चात ही वह जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकेंगे।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोध कर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयां में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन एवम् सामाजिक परिपक्वता को तुलनात्मक अध्ययन का आधार बनाया है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. सहशिक्षा विद्यालय एवं एकलशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का सामजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.. सहशिक्षा विद्यालय एवं एकलशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओंकी सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायें–

1. सहशिक्षा विद्यालय एवं एकलशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2. सहशिक्षा विद्यालय एवं एकलशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थ अन्तर नही है।

2. अनुसंधान क्रिया विधि–

अध्ययन की की जनसंख्या तथा न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के के सहशिक्षा विद्यालय तथा एकल विद्यालय इस अध्ययन की जनंसख्या है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में क्रमबद्ध प्रतिदर्श न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुए 5–5 सहशिक्षा विद्यालय बालिका एकल व बालक एकल विद्यालय का चयन किया गया है।

उपकरण एवं स्त्रोत–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आकडें एकत्रित करने के लिये ''नलिनी रॉव'' द्वारानिर्मित''सामाजिक परिपवक्ता मापनी'' प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध अभिकल्प–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध परिसीमन–

(प) शोध अध्ययन मेरठ जिले तक ही समिति रहेगा।

(पप) प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के कक्षा 11 के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

शोध सांख्कीय प्रविधियां–

प्रस्तुत शोध में निर्मित आकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान प्रमाणिक विचलन तथा टी टेस्ट के अनुसार उपयुक्त सांख्कीयों का प्रयोग किया गया है।

आकड़ों का विश्लेषण–

सारणी 1

सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यालय के प्रकार	छात्रों की संख्या	औसत मान	प्रमाणिक विचलन	टी. प्राप्तांक	सार्थकता परिणाम
सहशिक्षा विद्यालय के छात्र	50	43.57	6.37	4.273	सार्थक
एकल शिक्षा विद्यालय के छात्र	50	38.60	7.23		

;कद्धि त्र98 0ण्05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान त्र1ण्66

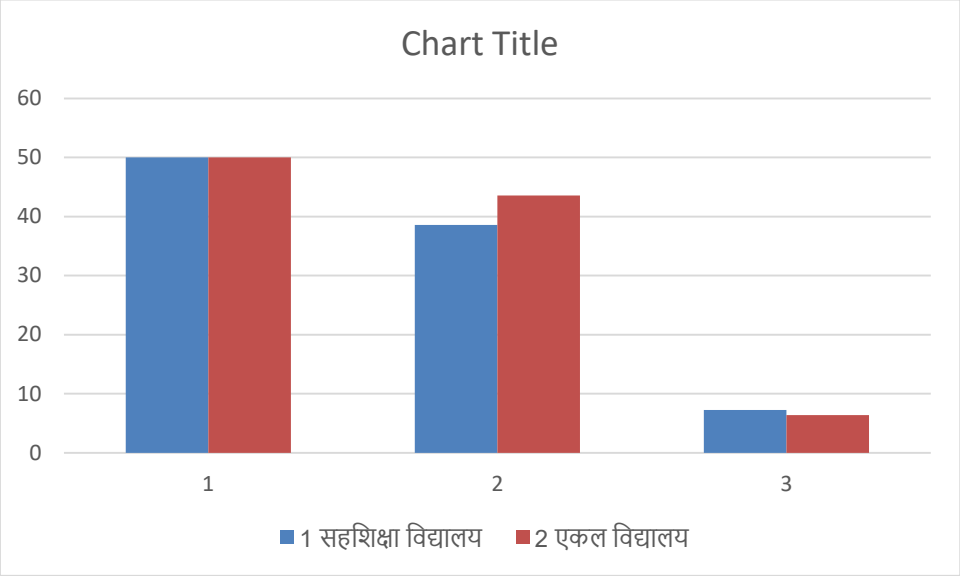

उपरोक्त सारणी न–1 में उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्ष विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के छात्रों की सामाजिक परिपक्वता से सम्बन्धित आंकड़ो का मध्यमान कमशः 43.57 व 38.60 तथा प्रमाणिक विचलन कमशः 6.23 व 7.23 प्राप्त हुआ प्राप्तांक की गणना के आधार पर टी का मान 4.23 प्राप्त हुआ जो स्वत्रन्ता अशं 98 सार्थकता स्तर 0. 05 के सारणी मान 1.66 से अधिक है इससे स्पष्ट होता है की उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के विद्यार्थियो की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना न.. को अस्वीकार करते हुये शोध र्थी 95 प्रतिशत विश्वास के साथ कह सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के छात्रो की सामाजिक परिपक्वता सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना संख्या 3 अस्वीकृत की जाती है।

सारणी 2

सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यालय के प्रकार	छात्राओं की संख्या	औसत मान	प्रमाणिक विचलन	टी. प्राप्तांक	सार्थकता परिणाम
सहशिक्षा विद्यालय के छात्राओं	50	41.50	5.30	3.98	सार्थक
एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं	50	32.60	6.23		

;कद्धि त्र98 0ण्05 सार्थकता स्तर

पर सारणी मान त्र1ण्66

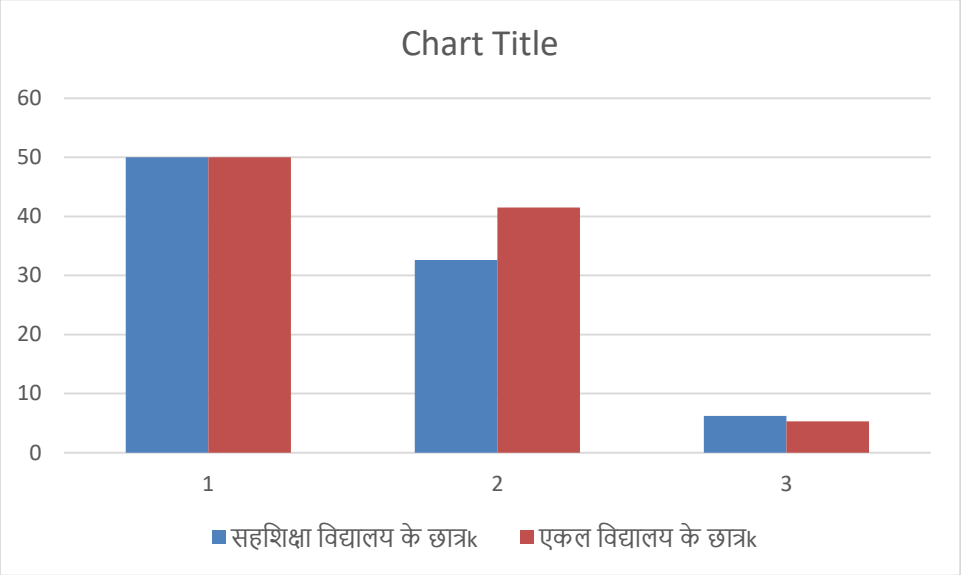

उपरोक्त सारणी न–2 में उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्ष विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता से सम्बन्धित आंकड़ो का मध्यमान कमशः 41.50 व 32.60 तथा प्रमाणिक विचलन कमशः 5.30 व 5.30 6.23 प्राप्त हुआ प्राप्तांक की गणना के आधार पर टी का मान 3.98 प्राप्त हुआ जो स्वत्रन्ता अशं 98 सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.66 से अधिक है इससे स्पष्ट होता है की उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षा विद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना न. 2 को अस्वीकार करते हुये शोध ाथी 95 प्रतिशत विश्वास के साथ कह सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के सहशिक्षाविद्यालय एवं एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना संख्या 4 अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रथ सूचि–

गुप्ता, एस.पी. और गुप्ता, अलका (2013), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन ।

गुप्ता, एस.पी. और गुप्ता, अलका (2022), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, सिद्धांत एवं व्यवहार, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन ।

पचौरी, प्रो. गिरीश, (2021), बालक एवं किशोर का विकास, मेरठ, अनु बुक्स।

फूलिया एस.एस., (2019), विकासात्मक मनोविज्ञान, दिल्ली (दरिया गंज), दि रीडर्स पैरडाईस।

ीजजचेरूध्ध्.उेन.दहध्टंर्ठ8ूझछ

पान्डे दीप, किशोरों के सामाजिक परिपवक्ता का तुलनात्मक अध्ययu', 2022, international journal for reserch trends and innovations, volume7, issue12, ISSN 2456&3315